कार्यक्रम की रूपरेखा

रविवार, 07 अप्रैल 2024
उद्घाटन सत्रम्
प्रातः 10.00-11.00 बजे तक

दीप प्रज्वलनम्, स्वस्तिवाचनम् अतिथिसत्कार
एवं उद्बोधन

शोधपत्र वाचन समय :
मध्याह 12.00 बजे से 2.30 बजे

भोजनम्
3.00 बजे 3.30 बजे

समापन समय :
समय : 3.30 बजे से 5.00 बजे

मुख्य वक्ता

आचार्य पं. प्रभुदत शास्त्री (व्याकरणाचार्य)
बादरायण धर्म - दर्शन - पीठाधीश्वर,
प्रपूर्णा - खेतड़ी (राज.)

संरक्षक

श्री उमा शंकर जी शर्मा (बरखेड़ा)

संयोजक,
आचार्या कीर्ति शर्मा

समन्वयक
डॉ. अनिल कुमार जैन

विद्वतजन समिति

डॉ परमानन्द भारद्वाज,डॉ कैलाश शर्मा
डॉ राजधर मिश्र,डॉ कुलदीप पालावत
डॉ मोहन लाल शर्मा,डॉ गणपत लाल मिश्रा
डॉ एल एन शास्त्री, महेन्द्र चन्द्र चाँदवाड

आयोजन समिति

आचार्य श्री राजानन्द शास्त्री,
श्री भूपेन्द्र कुमार सोनी,
डॉ श्री मृत्युंजय तिवारी, डॉ श्रुति पारीक
डॉ श्री कृष्णदेव शुक्ल, श्री महेन्द्र कुमार शर्मा,
श्री राजीव पाठक, श्री रमाकांत शर्मा, श्री विवेक महर्षि,
श्री जयपाल शर्मा, पंडित श्री विक्रम शर्मा

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
एवं
ज्योतिष वेदवेदाङ्ग संस्कृतसंस्थानम्

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय शोध संगोष्ठी
एवं
नव संवत्सर पंचांग पूजन
विद्वत सम्मान समारोह

7 अप्रैल 2024 (रविवार)

में आप सादर आमंत्रित है।

समन्वयक :

डॉ. अनिल कुमार जैन
प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत
महाविद्यालय,जयपुर

संयोजक :

आचार्या कीर्ति शर्मा
अध्यक्षा
ज्योतिष वेद वेदांग
संस्कृत संस्थानम्, जयपुर

संगोष्ठी स्थल

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय,
वीरोदय नगर,जैन नसियां रोड़, सांगानेर, जयपुर

Scanned with ACE Scanner

संस्थान परिचय

राजस्थान प्रान्त अपनी समृद्ध धर्मशास्त्रीय और ज्योतिष परम्पराओं के लिये विश्व विख्यात है। यहाँ के ज्योतिष शास्त्र ओर धर्म शास्त्र के विद्वानों के विश्व स्तर पर अपना परचम लहराया और अनेक शास्त्रीय ग्रन्थों का प्रणयन कर आने वाली पीढ़ी के लिये बहुमूल्य धरोहर संरक्षित की है वेद के छह वेदाङ्. में ज्योतिष और धर्म शास्त्र लोक जीवन में घनिष्ठ रूप से जुड़े है भारतीय जनमानस में जन्म से लेकर मरण तक के षोडश संस्कार हो अथवा यज्ञादि अनुष्ठान के बिना ज्योतिष और धर्मशास्त्र के ज्ञान के बिना संभव नही है इसी कारण पंचांग पूजन और पंचांग श्रवण की परम्परा को धर्म का आधार माना गया है वर्तमान में इस अमुल्य धरोहर को मूल स्वरूप में पुनः संस्थापित करने की आवश्यकता आ पड़ी है इसीलिये संस्कृत भाषा एवं प्राच्य विद्याओं (ज्योतिष, कर्मकाण्ड, वेद, पौरोहित्य, योग, वास्तु शिल्प) भारतीय संस्कृति में निहित मानवीय मूल्यों तथा संस्कारों आदि का संरक्षण संवर्द्धन करने के लिए इस संस्था का गठन किया गया है।

ज्योतिष वेद वेदाङ्. संस्कृत संस्थानम् का गठन सनातन संस्कृति की इन्ही परम्पराओं को वर्तमान पीढ़ी के बालक- बालिकाओं को परिचित करवाने के लिये किया गया प्रयास है ताकि हमारी वैदिक संस्कृति विलुप्त होने से बचाई जा सके। यह संस्था निरन्तर सनातन परम्परा एवं सनातन मूल्यों को जनसमाज में अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु प्रयत्नरत है ज्योर्तिविज्ञान के प्रति आस्था एवं विश्वास को बढ़ाने हेतु ज्योर्तिविज्ञान के मूलस्वरूप एवं सिद्धान्तों से समाज को अवगत करना संस्था का मूल उद्वेश्य है, जिससे आमजन ज्योर्तिविज्ञान के लाभ से लाभान्वित हो सके एवं सुखानुभूति अनुभूत कर सके।

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय और ज्योतिषवेदवेदाड़. संस्कृत संस्थानम् के सयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी ''ज्योतिषीय परिपेक्ष्य में विवाह'' विषय का आयोजन दिनांक 07 अप्रैल 2024 को जयपुर में किया जा रहा है। उक्त गरिमामय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सभी धाराओं के वैदिक ज्योतिष, हस्तरेखा, अंकज्योतिष वास्तु, रमल ज्योतिष, जैन दर्शन आदि से सम्बन्धित देश एवं प्रदेश के विख्यात, ज्योर्तिविद् मनीषी उपस्थित हो रहे है। इस अखिल भारतीय संगोष्ठी में हम आपको सादर आमंत्रित करते है अतः इस ज्ञानरूपी कार्यक्रम में उपस्थित होकर इस यज्ञ में आप भी अपनी आहुति प्रदान करें।

संगोष्ठी परिचय

हमारी संस्था सनातन धर्म की और युवाओं को जागृत करने के लिए प्रतिवर्ष चैत्र नवरात्रि (नवसंवत्सर के प्रारंभ) से दो दिवस पूर्व नवसंवत्सर पंचांग पूजन का कार्यक्रम विगत कई वर्षा से करती आ रही है, इस वर्ष ये कार्यक्रम व्यस्तता के चलते एकदिवसीय किया गया है जिसका शीर्षक है ''ज्योतिषीय परिपेक्ष्य में विवाह''। वर्तमान समय में आज की युवा पीढ़ी के मध्य वैवाहिक संबंधों को लेकर तनाव देरी से विवाह होना, विवाह के बाद अलगाव, विवाह के बाद संतान का न होना, कुंडली मिलान के बाद भी तलाक की प्रवतियाँ होना, विवाह के बाद अवसाद की स्थिति में जाना इस तरह के मामले बहुत बढ़ रहे हैं इन्ही सब चीजों को देखते हुए इन्ही सब बातों को ध्यान में रखते हुए ज्योतिष वेद वेदांग संस्कृत संस्थानम् द्वारा इस वर्ष ''ज्योतिषीय परिपेक्ष्य में विवाह'' पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।

प्रमुख शीर्षक एवं उपविषय

'' ज्योतिषीय परिपेक्ष्य में विवाह''

1. कुंडली मिलान के पश्चात भी तलाक क्यो ज्योतिषीय कारण और विवेचन
2. सुखी दाम्पत्य के लिए कुंडली मिलान कितना प्रासंगिक
3. विवाह में देरी के ज्योतिषीय कारण
4. प्रेम विवाह के कारक ग्रह और भाव एक विवेचन
5. विवाह सम्बन्धित अन्य ज्योतिषीय शोध

अनुदेश

शोधपत्र में शोधलेखक, सहलेखक का नाम, पदनाम संस्था का नाम, मोबाइल नम्बर तथा ईमेल स्पष्ट रूप से अंकित करें।

चयनित स्तरीय शोधपत्रों का प्रकाशन संस्थान द्वारा किया जायेगा।
शोधपत्र हिन्दी, संस्कृत व अग्रेजी भाषाओं में आमंत्रित है।

शोधपत्र की मौलिकता के सम्बन्ध में समस्त उतरदायित्व लेखक / सहलेखक का होगा।

सभी विद्वानों के लिए पंजीयन अनिवार्य है। पंजीकरण शुल्क रू. 500.00

रजिस्ट्रेशन के लिए लिंक :-
http://docs.google.com/froms/d/e
/1FALoQLSDF1nREhAWwmwXq4_HoGlYv22txsSQ10
mmtcrYHFT_MafqRG4A/viewform

ऑनलाईन माध्यम से पत्र प्रस्तुति करने वाले प्रतिभागियों को लिंक उपलब्ध करा दिया जायेगा ।

पंजीयन शुल्क जमा करने के लिए Phone pay / G pay/ Paytm नम्बर पर कर सकते है।
आचार्या कीर्ति शर्मा 9950570978
ई-मेल : acharyakirtisharma@gmail.com

शुल्क जमा करने के पश्चात आप स्कीनशॉट भेज कर अवश्य कॉल करें।

भोजनादि की व्यवस्था केवल पंजीकृत विद्वानों के लिए ही उपलब्ध रहेगी।
सम्पर्क सूत्र - आचार्या कीर्ति शर्मा 9950570978, 9414034747
किसी भी विषय पर संस्था का निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होगा।

पावन सानिध्यम्

गलतापीठाधीश्वर
अनन्त श्री विभूषित श्री सम्पत कुमार
अवधेशाचार्य जी महाराज

मुख्यातिथि
श्री हजारी लाल जी
संयुक्त निदेशक संस्कृत विभाग जयपुर (राज.)

मुख्य वक्ता
डॉ. परमानन्द भारद्वाज आचार्य ज्योतिष विभाग
श्री लालबहादुर शास्त्री
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली

सारस्वत अतिथि
डॉ मोहनलाल जी शर्मा
(व्याकरणाचार्य)

विशिष्ट अतिथि
नरेश कुमार सेठी (रिटायर्ड IAS)
दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय ,सांगानेर, जयपुर

अध्यक्षा -
आचार्या कीर्ति शर्मा
ज्योतिष वेद वेदांग संस्कृत संस्थानम्

Scanned with ACE Scanner